

VIDYA BHAWAN BALIKA VIDYA PITH

शक्ति उत्थान आश्रम लखीसराय बिहार

Class 12 commerce Sub. ECO(b) Date 15.04.2021

Teacher name – Ajay Kumar Sharma

INDIAN ECONOMY ON THE EVE OF INDEPENDENCE

Question 11:

Give a quantitative appraisal of India's demographic profile during the colonial period.

ANSWER:

India's Demographic conditions during the British rule depict our economy as stagnant and backward. Both the birth rate and death rate were as high as 48 and 40 per thousand. Due to high birth rate and high death rate the population growth was stagnant. The Infant Mortality Rate was also very high of about 218 per thousand. The Life Expectancy Rate was as low as 32 years while presently it is 63.5 years. The literacy rate was less than 16 percent which denotes social backwardness and gender bias in the economy. We can infer from the above figures that India was featured with massive poverty, low standard and quality of living and low survival rate in the country. The lack of health care facilities and lack of health awareness were the main causes behind such demographic conditions of India.

Question 12:

Highlight the salient features of India's pre-independence occupational structure.

ANSWER:

The occupational structure that refers to the distribution of population engaged in different occupations, showed no variation throughout the British rule. The following are the salient features of India's pre-independence occupational structure:

1. Agriculture- The Prime Occupation: Under the colonial rule, India was basically an agrarian economy, employing nearly 85% of its population. As India had a massive poverty during the colonial rule, so a large proportion of the population was engaged in agricultural sector to earn their subsistence. But due to the prevalence of *Zamindari* system, agricultural sector lacked investment and, thereby, its growth was highly constrained. Thus, in other words, despite employing a significant proportion of the population, the growth of agriculture sector was meager.

2. Industry- The Bleak Occupation: Apart from agriculture, a small proportion of population was employed in manufacturing sector. Nearly 10% of the total workforce was engaged in manufacturing and industrial sector. This was due to the stiff competition that the Indian industries faced from the machine made cheap goods from Britain. Further, the lack of investment, initiatives and the unfavourable tariff structure constrained industrial sector. Thus, the Indian industrial sector failed to contribute significantly to India's GDP.

3. Unbalanced Growth: The three sectors of Indian economy, i.e. agricultural, industrial and tertiary sector were unequally developed. While the agricultural sector was relatively developed, whereas, the other two sectors were at their infant stage. In addition, there was regional variation in the occupational structure of India. While on the one hand, states like Tamil Nadu, Andhra Pradesh and Bombay experienced a fall in the agricultural work force on the other hand states like Orissa, Rajasthan and Punjab experienced a rise in the agricultural workforce.

Question 13:

Underscore some of the India's most crucial economic challenges at the time of independence.

ANSWER:

The exploitative colonial rule of the British hampered almost every spheres of Indian economy badly. As an end-result, India faced acute economic challenges at the time of independence. The following are some of the economic challenges faced by the Indian economy:

1. Low Level of Agricultural Productivity: During the colonial rule Indian agricultural sector was used by the British to suit to their own interest. Consequently, Indian agricultural sector experienced stagnancy, low level of productivity, lack of investment, poor condition of landless farmers and peasants. Thus, the immediate concern for India was to develop its agricultural sector and its productivity. Some of the immediate reforms needed at the time of independence were abolition of *Zamindari* system, need of land reforms, reducing inequality of land ownership and upliftment of the peasants.

2. Infant Industrial Sector: India failed to develop a sound industrial base during the colonial rule. In order to develop the industrial sector, India needed huge capital, investments, infrastructure, human skills, technical knowhow and modern technology. Further, due to stiff competition from the British industries, India's domestic industries failed to sustain. Thus, developing small scale and large scale industries simultaneously was the main concern for India to develop its industrial sector. Moreover, the need to increase the share of industrial sector to India's GDP was one of the important economic challenges for India.

3. Lack in Infrastructure: Although there was a significant change in the infrastructural development in the country but this was not sufficient to improve the performance of agricultural and industrial sector. Also, there was a need to upgrade the existing infrastructure and to modernise the infrastructure to enhance its efficiency and effectiveness.

4. Poverty and Inequalities: India was trapped in the vicious circle of poverty and inequality. The colonial rule drained out a significant portion of India's wealth to Britain. Consequently, majority of India's population was poverty trodden. This further exaggerated economic inequalities across the country.

प्रश्न 11:

औपनिवेशिक काल के दौरान भारत के जनसांख्यिकीय प्रोफाइल का एक मात्रात्मक मूल्यांकन दें।

उत्तर:

ब्रिटिश शासन के दौरान भारत की जनसांख्यिकीय स्थितियाँ हमारी अर्थव्यवस्था को स्थिर और पिछड़े दर्शाती हैं। जन्म दर और मृत्यु दर दोनों 48 और 40 प्रति हजार थी। उच्च जन्म दर और उच्च मृत्यु दर के कारण जनसंख्या वृद्धि स्थिर थी। शिशु मृत्यु दर भी लगभग 218 प्रति हजार थी। जीवन प्रत्याशा दर 32 वर्ष के रूप में कम थी जबकि वर्तमान में यह 63.5 वर्ष है। साक्षरता दर 16 प्रतिशत से कम थी जो अर्थव्यवस्था में सामाजिक पिछड़ेपन और लैंगिक पूर्वाग्रह को दर्शाती है। हम उपरोक्त आंकड़ों से अनुमान लगा सकते हैं कि भारत देश में बड़े पैमाने पर गरीबी, निम्न स्तर और जीवन स्तर और निम्न जीवित रहने की दर के साथ चित्रित किया गया था। स्वास्थ्य देखभाल सुविधाओं की कमी और स्वास्थ्य जागरूकता की कमी भारत की ऐसी जनसांख्यिकीय स्थितियों के पीछे मुख्य कारण थे।

प्रश्न 12:

भारत की स्वतंत्रता-पूर्व व्यावसायिक संरचना की मुख्य विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

उत्तर:

व्यावसायिक संरचना जो विभिन्न व्यवसायों में लगी हुई जनसंख्या के वितरण को संदर्भित करती है, पूरे ब्रिटिश शासन में कोई भिन्नता नहीं दिखाती है। भारत की स्वतंत्रता-पूर्व व्यावसायिक संरचना की मुख्य विशेषताएं निम्नलिखित हैं:

1. कृषि- प्रधान व्यवसाय: औपनिवेशिक शासन के तहत, भारत मूल रूप से कृषि अर्थव्यवस्था था, जो लगभग 85% आबादी को रोजगार देता था। चूंकि भारत में औपनिवेशिक शासन के दौरान बड़े पैमाने पर गरीबी थी, इसलिए जनसंख्या का एक बड़ा हिस्सा अपने निर्वाह के लिए कृषि क्षेत्र में लगा हुआ था। लेकिन जमींदारी प्रणाली की व्यापकता के कारण, कृषि क्षेत्र में निवेश की कमी थी और इस कारण, इसकी वृद्धि अत्यधिक बाधित थी। इस प्रकार, दूसरे शब्दों में, जनसंख्या का एक महत्वपूर्ण अनुपात नियोजित करने के बावजूद, कृषि क्षेत्र की वृद्धि अल्प थी।

2. उद्योग- द ब्लेक ऑक्यूपेशन: कृषि के अलावा, विनिर्माण क्षेत्र में जनसंख्या का एक छोटा हिस्सा कार्यरत था। कुल कार्यबल का लगभग 10% विनिर्माण और औद्योगिक क्षेत्र में लगा हुआ था। यह कड़ी प्रतिस्पर्धा के कारण था कि मशीन से सामना करने वाले भारतीय उद्योगों ने ब्रिटेन से सस्ता माल बनाया। इसके अलावा, निवेश की कमी, पहल और प्रतिकूल टैरिफ संरचना ने औद्योगिक क्षेत्र को बाधित किया। इस प्रकार, भारतीय औद्योगिक क्षेत्र भारत के सकल घरेलू उत्पाद में महत्वपूर्ण योगदान देने में विफल रहा।

3. असंतुलित विकास: भारतीय अर्थव्यवस्था के तीन क्षेत्र, अर्थात् कृषि, औद्योगिक और तृतीयक क्षेत्र असमान रूप से विकसित थे। जबकि कृषि क्षेत्र अपेक्षाकृत विकसित था, जबकि अन्य दो क्षेत्र अपने शिशु अवस्था में थे। इसके अतिरिक्त, भारत की व्यावसायिक संरचना में क्षेत्रीय भिन्नता थी। जहां एक ओर

तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश और बॉम्बे जैसे राज्यों ने कृषि कार्य बल में गिरावट का अनुभव किया, वहीं दूसरी ओर उड़ीसा, राजस्थान और पंजाब जैसे राज्यों ने कृषि कार्यबल में वृद्धि का अनुभव किया।

प्रश्न 13:

स्वतंत्रता के समय भारत की सबसे महत्वपूर्ण आर्थिक चुनौतियों में से कुछ को रेखांकित करें।

उत्तर:

अंग्रेजों के शोषणकारी औपनिवेशिक शासन ने भारतीय अर्थव्यवस्था के लगभग हर क्षेत्र को बुरी तरह प्रभावित किया। अंतिम परिणाम के रूप में, भारत को स्वतंत्रता के समय तीव्र आर्थिक चुनौतियों का सामना करना पड़ा। भारतीय अर्थव्यवस्था के सामने आने वाली कुछ आर्थिक चुनौतियां निम्नलिखित हैं:

1. कृषि उत्पादकता का निम्न स्तर: औपनिवेशिक शासन के दौरान भारतीय कृषि क्षेत्र का उपयोग अंग्रेजों ने अपने हित के लिए किया था। नतीजतन, भारतीय कृषि क्षेत्र ने स्थिरता, उत्पादकता के निम्न स्तर, निवेश की कमी, भूमिहीन किसानों और किसानों की खराब स्थिति का अनुभव किया। इस प्रकार, भारत के लिए तत्काल चिंता अपने कृषि क्षेत्र और उसकी उत्पादकता को विकसित करना था। स्वतंत्रता के समय आवश्यक कुछ तत्काल सुधारों में जमींदारी प्रथा का उन्मूलन, भूमि सुधारों की आवश्यकता, भूमि के स्वामित्व की असमानता को कम करना और किसानों का उत्थान था।

2. शिशु औद्योगिक क्षेत्र: भारत औपनिवेशिक शासन के दौरान एक ध्वनि औद्योगिक आधार विकसित करने में विफल रहा। औद्योगिक क्षेत्र को विकसित करने के लिए, भारत को बड़ी पूंजी, निवेश, बुनियादी ढांचे, मानव कौशल, तकनीकी ज्ञान और आधुनिक तकनीक की आवश्यकता थी। इसके अलावा, ब्रिटिश उद्योगों से कड़ी प्रतिस्पर्धा के कारण, भारत के घरेलू उद्योग टिकने में विफल रहे। इस प्रकार, लघु और

बड़े पैमाने के उद्योगों को एक साथ विकसित करना भारत के लिए अपने औद्योगिक क्षेत्र को विकसित करने के लिए मुख्य चिंता का विषय था। इसके अलावा, भारत के सकल घरेलू उत्पाद में औद्योगिक क्षेत्र की हिस्सेदारी बढ़ाने की आवश्यकता भारत के लिए महत्वपूर्ण आर्थिक चुनौतियों में से एक थी।

3. इंफ्रास्ट्रक्चर में कमी: हालांकि देश में इंफ्रास्ट्रक्चरल डेवलपमेंट में महत्वपूर्ण बदलाव आया था लेकिन कृषि और औद्योगिक क्षेत्र के प्रदर्शन में सुधार के लिए यह पर्याप्त नहीं था। इसके अलावा, मौजूदा बुनियादी ढांचे को उन्नत करने और इसकी दक्षता और प्रभावशीलता को बढ़ाने के लिए बुनियादी ढांचे को आधुनिक बनाने की आवश्यकता थी।

4. गरीबी और असमानता: भारत गरीबी और असमानता के दुष्चक्र में फंस गया था। औपनिवेशिक शासन ने ब्रिटेन के लिए भारत के धन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बाहर निकाल दिया। नतीजतन, भारत की अधिकांश आबादी गरीबी के दायरे में थी। इसने देश भर में आर्थिक असमानताओं को बढ़ा दिया।
